

श्री गुरु नानक देव आरती ॥

धनासरी महला १ आरती १९ सतिगुर प्रसादि ॥  
गगन मै थालु रवि चंदु दीपक  
बने तारिका मंडल जनक मोती ॥

धूपु मल आनलो पवणु चवरो करे  
सगल बनराइ फूलंत जोती ॥

कैसी आरती होइ भव खंडना तेरी आरती ॥  
अनहता सबद वाजंत भेरी रहाउ ॥

सहस तव नैन नन नैन है तोहि कउ  
सहस मूरति नना एक तोही ॥

सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु  
सहस तव गंध इव चलत मोही ॥

सभ महि जोति जोति है सोइ ॥  
तिस कै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥

गुर साखी जोति परगटु होइ ॥  
जो तिसु भावै सु आरती होइ ॥

हरि चरण कमल मकरंद लोभित मनो  
अनदिनो मोहि आही पिआसा ॥

कृपा जलु देहि नानक सारिंग  
कउ होइ जा ते तेरै नामि वासा ॥

गगन मै थालु, रवि चंदु दीपक बने,  
तारका मंडल, जनक मोती।  
धूपु मलआनलो, पवण चवरो करे,सगल बनराइ फुलन्त जोति॥

कैसी आरती होइ॥  
भवखंडना तेरी आरती॥  
अनहत सबद बाजंत भेरी॥

### मूल गुरुमुखी पाठ

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने उरिका मंडल जनक मोती ॥  
धूपु मलआनलो पावणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥१॥

ਕੈਸੀ ਆਰਤੀ ਹੋਇ ਭਵਖੰਡਨਾ ਤੇਰੀ ਆਰਤੀ ॥ਅਨਹਤਾ ਸਬਦ ਵਾਜੰਤ ਭੇਰੀ ॥ਰਹਾਊ

॥

ਸਹਸ ਤਵ ਨੈਨ ਨਨ ਨੈਨ ਹੈ ਤੇਹਿ ਕਉ ਸਹਸ ਮੂਰਤਿ ਨਨਾ ਏਕ ਤੇਹੀ ॥  
ਸਹਸ ਪਦ ਬਿਮਲ ਨਨ ਏਕ ਪਦ ਗੰਧ ਬਿਨੂ ਸਹਸ ਤਵ ਗੰਧ ਆਇਵਿ ਚਲਤ ਮੋਹੀ ॥੨

॥

ਸਭ ਮਹਿ ਜੇਤਿ ਜੇਤਿ ਹੈ ਸੋਈ ॥ਤਿਸ ਕੈ ਚਾਨਣੁ ਹੋਇ ॥  
ਗੁਰ ਸਾਖੀ ਜੇਤਿ ਪਰਗਟੁ ਹੋਇ ॥ਜੇ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੁ ਆਰਤੀ ਹੋਇ ॥੩ ॥  
ਹਰਿ ਚਰਣ ਕਮਲ ਮਕਰੰਦ ਲੇਭਿਤ ਮਨੇ ਆਨਦਿਨੇ ਮੇਹਿ ਆਹਿ ਪਿਆਸਾ ॥  
ਕ੍ਰਿਪਾ ਜਲੁ ਦੇਹਿ ਨਾਨਕ ਸਾਰਿੰਗ ਕਉ ਹੋਇ ਜਾ ਤੇ ਤੈਰੇ ਨਾਮਿ ਵਾਸਾ ॥  
ਹਰਿ ਚਰਣ ਕਮਲ ਮਕਰੰਦ ਲੇਭਿਤ ਮਨੇ ਅਨਦਿਨੇ ਮੇਹਿ ਆਹੀ ਪਿਆਸਾ ॥੪

॥ਧਨਾਸਰੀ ਮ:੧